ISSN 2454-2725

96-97

अपैल-मई 2023 (सयुंक्त अंक)

अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

जनकृति

संपादक: डॉ. कुमार गौरव मिश्रा

Peer ReviewedJournal

Pc: loke

जनकृति

अंतरानुशासनिक पूर्व- समीक्षित द्विभाषी अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका

वर्ष 9, अंक 96-97 **अप्रैल-मई 2023**

परामर्श मंडल

डॉ. सुधा ओम ढींगरा, प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय, प्रो. रमा, डॉ. हरीश नवल, प्रो. हरीश अरोड़ा, डॉ. प्रेम जन्मेजय, डॉ. कैलाश कुमार मिश्रा, प्रो. शैलेन्द्र कुमार शर्मा, प्रो. कपिल कुमार, प्रो. जितेंद्र श्रीवास्तव प्रो. रत्नेश विश्वक्सेन

संपादक

डॉ. कुमार गौरव मिश्रा
(सहायक प्रोफ़ेसर)

सहायक संपादक

प्रो. पुनीत बिसारिया
(प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश)

संपादन मण्डल/विशेषज्ञ समिति

डॉ. सदानन्द काशीनाथ भोसले (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विद्यापीठ , महाराष्ट्र)
डॉ. दीपेन्द्र सिंह जाड़ेजा (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, महाराजा सयाजीराव बड़ौदा विश्वविद्यालय, वड़ोदरा)
डॉ. नाम देव (प्रोफ़ेसर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. प्रज्ञा (प्रोफ़ेसर, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. रचना सिंह (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिन्दू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. रूपा सिंह (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, बाबु शोभा राम गोवेरमेंट आर्ट कॉलेज, राजस्थान)
डॉ. पल्लवी (सहायक प्रोफ़ेसर, तेजपूर विश्वविद्यालय, असम)
डॉ. मोहसिन खान (प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, जेएसएम कॉलेज, रायगढ़, महाराष्ट्र)
डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा (सहायक प्रोफ़ेसर, मिजोरम विश्वविद्यालय, मिजोरम)
डॉ. प्रवीण कुमार (सहायक प्रोफ़ेसर, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश)
डॉ. मुन्ना कुमार पाण्डेय (एसोसिएट प्रोफ़ेसर, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)
डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी (सहायक प्रोफ़ेसर, जेआरएन राजस्थान विद्यापीठ, राजस्थान)
डॉ. अंबिकेश त्रिपाठी (सहायक प्रोफ़ेसर, गांधी एवं शांति विभाग, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
डॉ. ज्ञान प्रकाश (सहायक प्रोफ़ेसर, बिहार)

संपादन सहयोग

डॉ. चन्दन कुमार (दिल्ली)
डॉ. राकेश कुमार (दिल्ली)

संस्थापक सदस्य

कविता सिंह चौहान (मुंबई)
डॉ. जैनेन्द्र कुमार (बिहार)

अंतरराष्ट्रीय सदस्य

प्रो. अरुण प्रकाश मिश्रा (स्लोवेनिया), डॉ. इंदु चंद्रा (फ़िजी), डॉ. सोनिया तनेजा (स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी), डॉ. अनिता कपूर (अमेरिका), राकेश माथुर (लंदन), रिद्मा (श्री लंका), मीना चोपड़ा (कैनेडा), पूजा अनिल (स्पेन)

जनकृति अव्यवसायिक
अप्रैल-मई 2023 (सयुंक्त अंक) अंक 96-97, वर्ष 9

सहयोग राशि	:	60 रुपये (वर्तमान अंक) 150 रुपये (संस्थागत)
व्यक्तिगत सदस्यता	:	800 रुपये (वार्षिक) 3000 रुपये (पंचवर्षीय) 5000 रुपये (आजीवन) **(डिजिटल प्रति सदस्यता)**
संस्थागत सदस्यता	:	1200 रुपये (वार्षिक) 6000 रुपये (पंचवर्षीय) 10000 रुपये (आजीवन)
बैंक खाता विवरण	:	Account holder's name- Kumar Gaurav Mishra Bank name - Punjab National Bank Account type – saving account Account no. 7277000400001574 IFSC code- PUNB0727700
पत्र व्यवहार	:	फ्लैट- 402, वृंदावन अपार्टमेंट फजलगंज, मंगलम होटल, ओल्ड जीटी रोड़, सासाराम, रोहतास, बिहार पिन कोड: 821115, संपर्क- +918805408656
नोट	:	प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। सम्पादन पूर्णतः अवैतनिक है।
ध्यानार्थ	:	अकादमिक क्षेत्र में शोध की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप जनकृति में शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। शोध आलेखों का चयन विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है, जो विषय की नवीनता, मौलिकता, तथ्य इत्यादि के आधार पर चयन करते हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में साहित्यिक रचनाएँ, वैचारिक लेख, साक्षात्कार एवं पुस्तक समीक्षा भी प्रकाशित होती है। जनकृति के माध्यम से हम सृजनात्मक, वैचारिक वातावरण के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है।

JANKRITI
Interdisciplinary Peer-Reviewed Bilingual International Monthly Magazine
Editor: Dr. Kumar Gaurav Mishra
Language: Bilingual (Hindi & English)
Publisher: JANKRITI
ISSN: 2454-2725
Website: www.jankriti.com
Email: jankritipatrika@gmail.com

संपादकीय

आप सभी पाठकों के समक्ष जनकृति का अप्रैल-मई 2023 सयुंक्तअंक प्रस्तुत है। इस अंक में आप साहित्य, कला, इतिहास, संस्कृति इत्यादि क्षेत्रों के महत्वपूर्ण विषयों पर आधारित शोध आलेख, लेख पढ़ सकते हैं। इसके अतिरिक्त अंक में आप साहित्यिक रचनाएँ भी पढ़ सकते हैं।

जनकृति एक बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय मासिक पत्रिका है। यह पूर्ण रूप से विमर्श केन्द्रित पत्रिका है, जहां आप विभिन्न अनुशासन के नवीन विषयों को एकसाथ पढ़ सकते हैं। पत्रिका में एक ओर जहां साहित्य की विविध विधाओं में रचनाएँ प्रकाशित की जाती है वहीं नवीन विषयों पर लेख, शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। अकादमिक क्षेत्र में शोध की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप शोध आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। शोध आलेखों का चयन विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है, जो विषय की नवीनता, मौलिकता, तथ्य इत्यादि के आधार पर चयन करते हैं। जनकृति के माध्यम से हम सृजनात्मक, वैचारिक वातावरण के निर्माण हेतु प्रतिबद्ध है।

- **डॉ. कुमार गौरव मिश्रा**

अनुक्रम

कला-विमर्श

हिन्दी कहानियों का मंचीय प्रवेश / कपिल कुमार 8

'दशावतार' लोक-नाट्य में चित्रित लोक-परंपरा / प्रियंका राजेंद्रप्रसाद चौहान 14

वेब सीरीज की नई दुनिया : ओटीटी प्लेटफॉर्म / डॉ. हंसराज 'सुमन' 25

दलित एवं आदिवासी -विमर्श

हिंदी दलित साहित्य में अस्मिता और वर्ग की पारस्परिकता / विकाश कुमार 37

हाशिये के समाज की अवधारणा और पेरियार ललई सिंह की वैचारिकी / विजय कुमार 46

अस्मिता संबंधी चिंतन और विमर्श : 'जूठन' के विशेष सन्दर्भ में / ज्योति 55

गद्दी जनजाति की आर्थिक गतिविधियों का : एक मानवशास्त्रीय अध्ययन (ग्राम-जियाखास, जिला-काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश के विशेष सन्दर्भ में) / महेन्द्र कुमार जायसवाल, डॉ. सोनिया कौशल 77

आदिवासी राजनीतिक संघर्ष : समर शेष है ?/ निधि पांडेय 88

कांशीराम: दलित विमर्श उत्तर-अम्बेडकर / सुमीत कुमार गुप्ता 95

भारतीय विधायिका और संसदीय लोकतंत्र में आदिवासी हस्तक्षेप- झारखंड आंदोलन का इतिहास / राकेश कुमार, डॉ सुचेता सेन चौधुरी 103

स्त्री-विमर्श

भारतीय सनातन परंपरा में स्त्री / डॉ. मनीषा पांडेय 117

नवजागरण और स्त्री शिक्षा / प्रिया राज 125

किन्नर-विमर्श

'थर्ड जेण्डर' समाज के प्रति सामाजिक चेतना प्रेषित करते टी.वी. विज्ञापन / सुमन राजभर 131

मीडिया-विमर्श

Objectification of Women in Advertisements and Promotions: A Critical Study / Mohammed Johaed, Saddam Hossain 138

The Art of Storytelling through the Lens: A Closer Look at Raghu Rai's Photojournalism and Its Relevance Today/ Amit Mishra 149

जन-चेतना की निर्मिति में 'चाँद' पत्रिका की भूमिका / अनूप कुमार 158

न्यू मीडियां में हिंदी का प्रयोग व प्रभावशीलता / डॉ.सुनील कुमार 164

भाषिक-विमर्श

आचार्य किशोरीदास वाजपेयी और हिंदी विभक्ति / डॉ. स्वर्ण लता सिन्हा 173

भारतीय विदेश निति के बदलते आयाम / रवि कुमार 210

शिक्षा -विमर्श

Early Childhood Care and Education / Dr. Kalyani Pradhan 180

शिक्षा में लोकसाहित्य की प्रासंगिकता (लोक-कथाओं के विशेष संदर्भ में)/ आरती तिवारी 201

राजनीतिक-विमर्श

भारतीय विदेश निति के बदलते आयाम / रवि कुमार 210

इतिहास

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में आध्यात्मिक चेतनाशील व्यक्तित्व / डा० आनन्द कुमार त्रिपाठी 219
Settlement Pattern of Painted Grey Ware Sites of the Yamuna-Hindon Doab Dr. Rewant Vikram Singh 228
रामायणयुगीन आश्रम संस्कृति- एक वैशिष्ट्य / डॉ. महेन्द्र कुमार उपाध्याय 243

दर्शन

The Concept of Consciousness in the Advaita philosophy / Dr. Mukul Bala 248

समसामयिक-विमर्श

कोविड-19 में महिलाओं पर संकट / प्रीति 258

साहित्यिक-विमर्श

भारतीय काव्यशास्त्र में साधारणीकरण का महत्व / प्रो. रत्नेश विष्वक्सेन 271
भारतीय काव्यशास्त्र परम्परा में 'रस' विमर्श / डॉ.मीरा कुमारी 279
हिन्दी ग़ज़ल में आदिवासी जीवन / अमन कुमार 291
हाशिए के समाज का जीवन यथार्थ और 'साँप' उपन्यास / अविनाश बनर्जी 301
कला बनाम राजनीति : (विशेष संदर्भ हसीनाबाद)/ हारून अंसारी 315
स्वतंत्रता आंदोलन में देश प्रेम कविताओं की भूमिका /डॉ. बसुन्धरा उपाध्याय 323
हिंदी उपन्यासों में चित्रित कश्मीरी स्त्री / सौम्या वर्मा 333
'सुमंगली' कहानी में दलित स्त्री दशा का अंकन: नारीवादी दृष्टि से / मिनाली गुप्ता 340
समकालीन परिदृश्य में परंपरा के स्वीकरण की चुनौतियाँ और समाधान / प्रो. गुंजन 350
संजीव के कथा-साहित्य में स्त्री का विद्रोही स्वरूप / क्षमा यादव 359
ताज और फूलीबाई के लेखन में प्रतीक योजना / ज्योति 368
आंचलिक उपन्यास का भाषा-शिल्प / शेफालिका शेखर 375
शेखर एक जीवनी में क्रांति का स्वर / सूर्य प्रकाश त्रिपाठी 381
वैश्वीकरण और जल, जंगल, जमीन का सवाल (आदिवासी साहित्य की हिन्दी कहानी के संदर्भ में)/ डॉ. रहीम मियाँ 387
ललदेद / चेतन विष्णु रवेलिया 395
त्रासदितों और दु:खों से उपजी ओमप्रकाश वाल्मीकि की दलित कहानियाँ / राज कुमार 404
रघुवीर सहाय की कविता में मूल संवेदना / पूजा झा 413
त्रिलोचन के गद्य साहित्य 'देशकाल' में सामाजिक चेतना के स्वर / मुमताज़ परवीन 420
डॉ.सुशीला टाकभौरे के कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याएं / श्री प्रकाश, डॉ . आशा मीणा 428
डॉ. रमेश पोखरियाल के काव्य में सांस्कृतिक एवं दार्शनिक बोध / डॉ. रमा आर्य 438
डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली के निबंध साहित्य में लोक और वेद चिंतन / सी. मालसोमत्लूआंगी, डॉ. अखिलेश कुमार शर्मा 446

अलगाव-बोध और ज्ञानरंजन की कहानियाँ / लौह कुमार 454
उषा प्रियंवदा की कहानियों में महानगरीय संत्रास- बोध / डॉ पूनम सिंह 463
छप्पर में अम्बेडकरवादी दर्शन/ अजय कुमार चौधरी 474
वर्तमान समय और समाज में कबीर की प्रासंगिकता / डॉ. अंजु 481
ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानियों में सामाजिक चेतना / ज्ञानेश्वरी रौतिया 488
अस्मिता पर ग्रहण के प्रश्न:अखिलेश का कथा साहित्य /आदित्य रंजन यादव 494
अरुण प्रकाश की कहानियों में निहित समाजिक संदर्भ / डॉ चंदा सागर 504
डॉ. मधु धवन की रचनाओं में नारी की पश्चाताप / सुधा. वी 519
नारी अस्मिता के उठते नए सवाल: मृदुला गर्ग की "अवकाश" कहानी के सन्दर्भ से / डॉ. छाया चौबे 524
असमिया साहित्य और समाज में राम / डॉ जोनाली बरुवा 530
'अकाल में उत्सव' उपन्यास में अभिव्यक्त किसान जीवन और उनकी समस्याएँ / कंचन चौहान 541
राहुल सांकृत्यायन के कथा साहित्य में अभिव्यक्त राजनीतिक चेतना /आकाश शंकर 548
'जिनगीक ओरिआओन करैत' मे कविक जीबटपन एवं मानवीय संवेदना / डॉ. रमण कान्त चौधरी 559
प्यार न होता धरती पर तो सारा जग बंजारा होता / प्रो. प्रतिभा राजहंस 568

धर्म एवं संस्कृति

विश्नोई धर्म दर्शन में प्रकृति संरक्षण की महत्ता और वर्तमान में प्रासंगिकता / विजेंद्र मीना 583
पांचवीं देवी शक्ति पीठ जोगुलम्बा देवी: हेमलपुरम (आलमपुर): तेलंगाना राज्य के प्रसिद्ध मंदिर / सुनंदा ठाकुर 590
भारतीय समुदायों में हनुमान चरित्र / तिलकराज गर्ग, डॉ. प्रदीप कुमार 595
किन्नौर की बदलती संस्कृति का स्वरूप / सूरज गंगा 602

लोक साहित्य

आदिवासी लोक साहित्य में जीवन का राग-रंग/ पूनम 608

आलेख

किस्सा, किस्सागो एवं किस्सागोई / राजेन्द्र सिंह गहलौत 615
कहानीकार बलराम / डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय 628

अनुवाद

अनुवाद की संकल्पना में संज्ञा की अनुवादनीयता का प्रश्न
(हिंदी से अनुवाद करने के विशेष संदर्भ में)/ शिवानी पंवार 633

साहित्यिक रचनाएँ: कविता

मनोज कुमार शर्मा 643

कहानी

चौख़ट / रामेश्वर महादेव वाढेकर 646
अभी जिंदा हूं मैं/ श्यामल बिहारी महतो 653

पुस्तक समीक्षा

समकालीन कविता के तंत्र में 'रंगतंत्र' / समीक्षक: तेजस पूनियां 663
आजादी और लोकतंत्र के पहरुए / समीक्षक: राजनारायण बोहरे 670

हिन्दी कहानियों का मंचीय प्रवेश

कपिल कुमार
शोधार्थी, हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डी.एस.बी. परिसर, कुमाऊं विश्वविद्यालय
नैनीताल, उत्तराखण्ड
ईमेल-arya.kapil193@gmail.com
9718514143

सारांश

आज के समय में हिन्दी रंगमंच पर नाटक के अतिरिक्त अन्य साहित्यिक विधाओं की भी सक्रिय भागीदारी देखने को मिलती है। नाटकेत्तर विधाओं के मंचन ने एक अनूठी रंग-शैली के रूप में अपनी पहचान बनाई है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी रंगमंच में नवीन परिवर्तन देखने को मिलते हैं। हिन्दी साहित्य जगत में विधा के रूप में 'कहानी' का आगमन तो बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ही हो गया था किंतु ऐसा नहीं है कि उस काल विशेष से ही कहानी मंच पर साकार उपस्थित होने लगी थी। एक लम्बी प्रक्रिया और प्रयोग के पश्चात लगभग सत्तर के दशक में 'हिन्दी कहानी के रंगमंच' ने एक नई रंग-शैली के रूप में स्वयं को स्थापित किया। यह एक नई रंग-दृष्टि, रंगमंचीय संभावना और नवीन रंगप्रयोग का ही परिणाम था।

बीज शब्द: *रंगमंच, कहानी, शैली, दृष्टि, प्रयोग*

शोध आलेख

आज के समय में हिन्दी रंगमंच पर नाटक के अतिरिक्त अन्य साहित्यिक विधाओं की भी सक्रिय भागीदारी देखने को मिलती है। नाटकेत्तर विधाओं के मंचन ने एक अनूठी रंग-शैली के रूप में अपनी पहचान बनाई है। स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी रंगमंच में नवीन परिवर्तन देखने को मिलते हैं।

साठ से सत्तर के दशक में हिन्दी रंगमंच में अनेक रंगप्रयोग रेखांकित होते हैं। इन रंगप्रयोगों के कारण ही नाटकेतर विधाओं का मंचन एक नई रंग-शैली के रूप में हिन्दी रंगमंच का महत्वपूर्ण अंग बना। हिन्दी रंगमंच में नाटकेतर विधाओं का आगमन कोई सहज घटना नहीं थी बल्कि यह रंगमंच में नई संभावनाओं की तलाश करते परिश्रमी और प्रशिक्षित रंगकर्मियों के रंगप्रयोगों का परिणाम था। यही वह समय था जब हिन्दी की तमाम नाटकेतर विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, यात्रा-संस्मरण, आत्मकथा, जीवनी आदि के मंचन की शुरूआत होती है। नाटकेतर

विधाओं के मंचन में अंतर्निहित रंगप्रयोगों ने हिन्दी रंगमंच को एक नया आयाम प्रदान किया है। नतीजतन इन मंचनों के सफल प्रयोगों के कारण इन्हें नाट्य-मंचन की ही भांति सम्मान और महत्व प्राप्त है। आज हिन्दी रंगमंच की दुनिया में नाटकेतर विधाओं के मंचन का विशिष्ट स्थान है। नाटकेतर विधाओं के मंचन में मुख्य रूप से 'कहानी का रंगमंच' अधिक लोकप्रिय हुआ है जिसके कुछ विशेष कारण हो सकते हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि मंच पर प्रस्तुत किया जाने वाला कोई भी नाटक निश्चित तौर पर किसी घटना-कहानी पर ही आधारित होता है। मूल रूप से कह सकते हैं कि किसी कहानी या घटना को आधार बनाकर ही नाटक की रचना की जाती है। इससे तो यह भी माना जा सकता है कि 'हिन्दी कहानी के रंगमंच' की सत्ता हिन्दी रंगकर्म के प्रारंभ से ही विद्यमान है। किंतु अगर ऐसा है तो 'कहानी के रंगमंच' को एक नवीन और प्रयोगात्मक रंग-शैली के रूप में क्यों देखा जाता है ? इस उलझन को सुलझाने के लिए हमें यह समझना होगा कि जब हम 'कहानी के रंगमंच' की बात कर रहे हैं तो इससे हमारा तात्पर्य विधागत हिन्दी कहानी के मंचन से है। यह किसी कहानी को आधार बनाकर लिखे गए 'नाटक' का मंचन नहीं है और न ही किसी कहानी पर आधारित नाटक का मंचन है बल्कि यह अभिनय द्वारा किसी कहानी(प्रकाशित) को ज्यों का त्यों मंच पर प्रस्तुत करने की कला और रंग-प्रयोग है।

हिन्दी कहानी की शुरुआत बीसवीं सदी के आरंभ से मानी जाती है। रामस्वरूप चतुर्वेदी लिखते हैं कि ''यह स्वाभाविक है कि अपने नए मुद्रित रूप में कहानी का हिन्दी साहित्य में आविर्भाव बीसवीं शती के आरंभ में होता है, साहित्यिक पत्रकारिता के उदय के साथ। मनोरंजन से हटकर एक अनुभूति का सीधा साक्षात्कार अब उसका विधागत लक्ष्य हो जाता है।''[1]

हिन्दी साहित्य जगत में विधा के रूप में 'कहानी' का आगमन तो बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ही हो गया था किंतु ऐसा नहीं है कि उस काल विशेष से ही कहानी मंच पर साकार उपस्थित होने लगी थी। एक लम्बी प्रक्रिया और प्रयोग के पश्चात लगभग सत्तर के दशक में 'हिन्दी कहानी के रंगमंच' ने एक नई रंग-शैली के रूप में स्वयं को स्थापित किया। यह एक नई रंग-दृष्टि, रंगमंचीय संभावना और नवीन रंगप्रयोग का ही परिणाम था।